THE RESEARCH DIALOGUE
An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
© The Research Dialogue | Volume-05 | Issue-01 | April-2026
Available online at: https://theresearchdialogue.com/
DOI : https://doi.org/10.64880/theresearchdialogue.v5i1.29

समाज परिवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती

डा. मिथलेश गंगवार
असिस्टेंट प्रोफेसर (संस्कृत विभाग)
दयानन्द गर्ल्स पी०जी०कालेज, कानपुर
Email: gang.mithlesh@gmail.com

सारांश

महर्षि दयानन्द ने वेदों को मानव जीवन के सर्वांगीण विकास का आधार मानते हुए भारतीय समाज में व्याप्त अंधविश्वास, मूर्तिपूजा, जातिगत भेदभाव, बालविवाह, सतीप्रथा तथा सामाजिक कुरीतियों का प्रबल विरोध किया। उन्होंने स्त्री शिक्षा, स्त्री स्वतंत्रता, विधवा-विवाह, समान अधिकार तथा कर्माधारित वर्ण व्यवस्था का समर्थन कर समाज में नवीन चेतना का संचार किया। इस शोध में स्वामी दयानन्द के वैदिक चिंतन, शिक्षा-दर्शन, संस्कार व्यवस्था, यज्ञ की महत्ता, राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार तथा धार्मिक-सामाजिक सुधारों का विवेचन किया गया है। साथ ही उनके प्रमुख ग्रन्थों, शास्त्रार्थों एवं आर्य समाज के माध्यम से भारतीय पुनर्जागरण में दिए गए योगदान का अध्ययन किया गया है। महर्षि दयानन्द ने वेदों को विज्ञान, कर्म, उपासना और ज्ञान का मूल स्रोत मानकर भारतीय समाज को आत्मगौरव, तर्कशीलता एवं नैतिकता की दिशा प्रदान की। यह कहा जा सकता है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती केवल धार्मिक सुधारक ही नहीं, बल्कि आधुनिक भारत के वैचारिक निर्माता, सामाजिक क्रान्ति के प्रवर्तक तथा राष्ट्रीय चेतना के प्रेरणास्रोत थे। उनके विचार आज भी सामाजिक समता, शिक्षा, राष्ट्रभाषा, स्त्री अधिकार एवं सांस्कृतिक पुनर्जागरण के संदर्भ में अत्यंत प्रासंगिक हैं।

मुख्य शब्द: महर्षि दयानन्द सरस्वती, आर्य समाज, वैदिक पुनर्जागरण, सामाजिक सुधार, स्त्री शिक्षा, वैदिक धर्म, भारतीय पुनर्जागरण, जाति प्रथा, शिक्षा दर्शन, हिन्दी प्रचार, संस्कार व्यवस्था, यज्ञ परम्परा, राष्ट्रचेतना, वैदिक संस्कृति,समाज सुधार आन्दोलन।

महर्षि दयानन्द सरस्वती यदि शरीर है तो वेद उनकी आत्मा। समस्त सामाजिक मतभेदों को दूर करने के लिए उन्हें वेदों में संजीवनी बूटी दिखाई दी और उन्होंने वेदों को सत्य सनातन संस्कृति के मूल रूप में उजागर करने के लिए और सम्पूर्ण भारत वर्ष को धार्मिक एवं सामाजिक एकता का सबल सूत्र बनाने का निश्चय किया। जातियों में विभाजित राष्ट्र को एकता के सूत्र में बांधने के लिए उन्हें जिस संजीवनी की खोज थी, वह भी उन्हें वेदों में प्रतिपादित 'आर्य' शब्द में मिल गयी।

जब स्वामी दयानन्द सरस्वती के रूप में तिमिरहर्ता सूर्य उदित हुआ, तब मानव जीवन का अज्ञानमय अन्धकार दूर हुआ और मानव को वेदोन्मुख करने का अनुपम कार्य गतिशील हुआ। स्वामी जी ने ऐसे नारी समाज, जिसके साथ सदियों से निर्मम व्यवहार किया जाता रहा, उसे एक गरिमापूर्ण स्थान पर प्रतिष्ठित कर, समान अवसर प्रदान करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। स्वामी जी स्त्री जाति की पूर्ण स्वतंत्रता और वेदाधिकार के पक्षपाती थे, उनके हृदय में नारी समाज के लिए अतिशय सम्मान का भाव था। उन्होंने प्रत्येक मनुष्य के कल्याण के लिए समान अवसरों का मार्ग प्रशस्त कर व्याप्त कालिमा को हटाया। परतन्त्रता की बेड़ियों में जकड़े भारतीयों की मृतप्राय आत्मा को झकझोर कर स्वाभिमान से जीने हेतु मुक्ति के मन्त्रों से प्रेरित किया। तत्कालीन

समाजोद्धारकों व राष्ट्र चेतनाओं में किसी में स्वधर्म की चिंगारी थी, किसी में स्वराज्य की तो किसी में स्वभाषा की और किसी में स्वसंस्कृति की चिंगारी अलग-थलग दिखाई पड़ती थी। वह ऋषि की राष्ट्रीय चेतना में एकीकृत, पुञ्जीभूत, जाज्वल्यमान अग्निपुञ्ज के समान सूत्रबद्ध है। (1)

किसी भी देश व समाज के धर्म, शिक्षा, अर्थ व राजनीति यह चार सुदृढ़ स्तम्भ होते हैं। दुर्भाग्यवश भारतवर्ष के यह सभी स्तम्भ धराशाई हो चुके थे। शिक्षा अशिक्षा में बदल चुकी थी, वहीं धर्म अधर्म का चोला पहनकर सम्पूर्ण भारत को काल का ग्रास बना चुका था। पराधीन भारत में धर्म के नाम पर बढ़ते आडम्बर व पापाचरण को देख स्वामी जी की आत्मा रो रही थी। बलिप्रथा, सतीप्रथा, बाल विवाह जैसे जघन्य अपराध धर्म के नाम पर खुले आम किए जा रहे थे। जब चीत्कार करती नारियों का करुण क्रन्दन धर्माधिकारियों की मृत आत्मा को झकझोरने में असमर्थ हो रहा था, तब घनघोर गर्जना करती ऋषि की आबाज व लेखनी ने भारतीय समाज में भूचाल ला दिया था। (2)वस्तुत: ऋषि द्वारा वेदानुमोदित शास्त्रीय धर्म की उद्भावनाओं ने समस्त दिग्भ्रमित समाज को पवित्र पावनी ज्ञान गंगा में स्नान कराकर सुख और शान्ति के साथ स्थापित किया।

स्वामी दयानन्द के चिंतन की धुरी वेद हैं। उनकी दृष्टि में वेद अपौरुषेय हैं, और ईश्वर प्रेरित है। उन्होंने वैदिक धर्म की विकृतियों के विरुद्ध आवाज उठाई और शुद्ध वैदिक धर्म तथा संस्थाओं की स्थापना का प्रयास किया। स्वामी जी से पहले वेद कुछ ब्राह्मणों की संपत्ति थे। आप ने वेदों को पढ़ने पढ़ाने का अधिकार सबका माना। वेद के प्रचार के लिए लोक भाषा हिंदी का सहारा लिया। स्वामी दयानन्द के अनुसार वेदों के प्रमुख रूप से चार विषयों का प्रतिपादन है: (1) विज्ञान (2) कर्म (3)उपासना और (4) ज्ञान | स्वामी जी के मत में विज्ञान वह है, जिसके द्वारा मनुष्य ईश्वर तथा विश्व के समस्त पदार्थ का सही-सही जानकारी प्राप्त करता है। वेदों का दूसरा विषय कर्म है। इसका अर्थ है धर्म का वास्तविक ज्ञान और उसका अनुष्ठान। अर्थ, काम और उसकी सिद्धि के लिए काम में आने वाले सारे साधन भी कर्म के अंतर्गत ही आते हैं। वेदों के दो अन्य विषय उपासना और ज्ञान हैं। स्वामी जी के अनुसार यह विषय भी विज्ञान के अंतर्गत आ जाते हैं। स्वामी जी ने ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका में विद्युत, विमान, विद्या, खगोल ज्ञान, भूगोल, गणित आदि के बीज ढूंढ निकाले हैं, उन्होंने अनेक वैदिक मन्त्रों की व्याख्या में विज्ञान का महत्त्व का प्रतिपादन किया है।

मानव -चिन्तन को स्वामी दयानन्द की एक बड़ी दिन वेदों की व्याख्या है। भारतीय चिंतन में वेदों का महत्त्व चिरकाल से माना जाता था, लेकिन उसके बाद वास्तविक अर्थ से बहुत कम लोग परिचित थे, स्वामी दयानन्द के आविर्भाव से पूर्व वेदों की प्रामाणिकता पर चर्चा शास्त्रज्ञ पंडितों के वाणी - विलास का ही विषय रही, मानव जीवन में उसके महत्त्व और उपयोगिता को भली-भांति आका नहीं गया ।(3) स्वामी दयानन्द वेदों को विज्ञान,कर्म,उपासना और ज्ञान का आधार मानते थे, उनकी दृष्टि में वेद, धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की सिद्धि का साधन हैं। स्वामी दयानन्द केवल संहिता भाग को ही वेद मानते हैं, ब्राह्मण भाग को नहीं ।उनके मत में ब्राह्मण ग्रंथ वेदों के व्याख्यान हैं। (4)

स्वामी दयानंद ने वेद विषय मान्यताओं को स्पष्ट करने के लिए ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका ग्रंथ की रचना की, जिसका प्रयोजन निम्न शब्दों में प्रकट किया, " इस वेद भाष्य में अप्रमाण लेख कुछ भी नहीं किया जाता है, किंतु जो ब्रह्म से लेकर व्यासपर्यंत मुनि और ऋषि हुए हैं,उनकी जो व्याख्या रीति है उससे युक्त ही यह वेद भाष्य बनाया जाएगा ।यह भाष्य ऐसा होगा जिससे वेदार्थ के विरुद्ध अब के बने भाष्य और टिकाओं से वेदों में भ्रम से जो मिथ्या दोषों के आरोप हुए हैं,वे सब निवृत हो जाएंगे और इस भाष्य से वेदों का जो सत्य अर्थ है जो संसार में प्रसिद्ध हो,कि वेदों के सनातन अर्थ को सब लोग यथावत जान लें… l." (5)

मानव जीवन की उन्नति में संस्कारों का विशिष्ट महत्त्व है, मानव की शारीरिक मानसिक तथा आत्मिक उन्नति के लिए जन्म से लेकर मृत्युपर्यंत भिन्न-भिन्न समय पर संस्कारों की व्यवस्था प्राचीन ऋषि मुनियों ने बहुत ही सुंदर ढंग से की है। महर्षि ने संस्कारों का महत्त्व इस प्रकार बताया है-

जिसको करके शरीर और आत्मा सुसंस्कृत होने से धर्म,अर्थ, काम और मोक्ष को प्राप्त हो सकते हैं और सन्तान अत्यंत योग्य होते हैं इसलिए संस्कारों को करना हम सब मनुष्यों को अति उचित है। (6) वह कहते हैं-

संस्कारैस्संस्कृतं यद्यन्मेध्यमत्र तदुच्यते। असंस्कृतं तु यल्लोके तदमेध्यं प्रकीर्त्यते ।।

अतः संस्कारकरणे क्रियतामुद्यमो बुधैः । शिक्षयौषधिभिर्नित्यं सर्वथा सुखवर्धनः ॥(7)

स्वामी दयानन्द ने अपने जीवन में अनेक शास्त्रार्थ किए थे। यह शास्त्रार्थ अधिकतर मूर्ति पूजा पर केंद्रित थे। शास्त्रार्थ के कुछ अन्य विषय थे - व्याकरण, अवतारवाद,अद्वैतवाद, मोक्ष, सृष्टि उत्पत्ति, पुनर्जन्म, ईश्वर साकार है या निराकार आदि। स्वामी जी के शास्त्रार्थ में काशी का शास्त्रार्थ सबसे प्रसिद्ध है। यह शास्त्रार्थ 16 नवंबर 1869 जिसका विषय मूर्ति पूजा था। जिसमें प्रतिवादी स्वामी विशुद्धानंद आदि 40 प्रमुख पंडित थे। दोनों पक्षों ने 21 शास्त्र प्रमाण कोटी में स्वीकार किए - चार वेद संहिताएं, चार उपवेद, वेदों के छह अंग, 6 उपांग तथा कुछ प्रक्षिप्त श्लोकों को छोड़कर मनुस्मृति। शास्त्रार्थ में लगभग 50,000 लोग उपस्थित थे। शास्त्रार्थ कई घंटे तक चला। काशी की विद्वान् मंडली मूर्ति पूजा को वेदसम्मत सिद्ध करने में असफल रही। इस शास्त्रार्थ का समाचार अनेक पत्रों - द क्रिश्चियन इंटेलिजेंसर, हिंदू पेट्रियट, पायोनियर, तत्त्वबोधिनी पत्रिका, रोहिलखंड समाचार आदि में प्रकाशित हुआ। शास्त्रार्थ की स्मृति में अमेठी नरेश राजा रणजय सिंह ने आनंदबाग में जहाँ शास्त्रार्थ हुआ था एक शिलालेख स्थापित कर दिया है। (8)

स्वामी दयानन्द वाणी के साथ ही लेखनी के भी धनी थे। उन्होंने अपने जीवन काल में हजारों व्याख्यान दिए और सैकड़ो शास्त्रार्थ किए। उन सभी का लिपिबद्ध ना होने से मानवता एक बहुमूल्य धरोहर से वंचित रह गई। फिर भी स्वामी दयानंद द्वारा रचित छोटे बड़े प्रयास 25 ग्रन्थों का विवरण प्राप्त होता है । (9) जिनका नाम संध्या, भागवत खंडन, अद्वैतमत खंडन,गर्दमपातिनी उपनिषद, सत्यार्थ प्रकाश, संध्योपासनादि पंचमहायज्ञविधि, वेदान्तिध्वांति निवारण, वेदविरुद्ध मतखंडन, शिक्षापत्री ध्वनिनिवारण, आर्यामिविनय,संस्कार विधि, वेदभाष्य का नमूना, ऋग्वेदभाष्य भूमिका, ऋग्वेद भाष्य, यजुर्वेद भाष्य, आर्योद्देश्यरत्नमाला,भ्रांति निवारण, अष्टाध्यायी भाष्य, आत्मचरित्र, संस्कृत वाक्यप्रबोध, व्यवहार भानु, गौतम अहिल्या की कथा, भ्रमोच्छेदन, गोकरुणानिधि, उपदेश मंजरी आदि हैं।(10)

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने ग्रन्थों में शिक्षा को बहुत अधिक महत्त्व दिया है।उनके मत में व्यक्ति समाज और राज्य की उन्नति तथा सुख समृद्धि इस दशा में संभव है, जब सब स्त्री पुरुष सुशिक्षित हों,सबको धर्म -अधर्म और कर्तव्य - अकर्तव्य का समुचित ज्ञान हो और विद्या तथा विज्ञान को सबके हित कल्याण के लिए प्रयुक्त किया जाए। मनुष्यों के लिए वास्तविक आभूषण उसकी विद्या का ज्ञान ही है सोने चांदी के आभूषण नहीं। संतानों को उत्तम विद्या, शिक्षा, गुण, कर्म और स्वभाव रूप आभूषणों को धारण कराना माता-पिता आचार्य और संबंधियों का मुख्य कर्म है। उनके मतानुसार बालको और बालिकाओं को 8 वर्ष के हो जाने पर उनकी शिक्षा का उत्तरदायित्व राज्य संस्था का है। राजा और प्रजा दोनों में विद्या विहीनता अनुचित है, राजा का मूर्ख होना तो बहुत बुरा है परंतु प्रजा का मूर्ख रहना भी बुरा है। प्रजा को विद्यायुक्त धर्मात्मा और चतुर करके उन पर राज्य करने में राजा और प्रजा की शोभा और सुखों की उन्नति होती है।(11) शिक्षा का अर्थ केवल पुस्तकीय ज्ञान प्राप्त करना नही है,उसका वास्तविक अर्थ व उद्देश्य व्यक्तित्व का चतुर्मुखी विकास करना है। जो मनुष्य शरीर और आत्मा के बल को नित्य बढ़ाते हैं वह योगाभ्यास से परमेश्वर में मोक्ष के आनंद को प्राप्त होते हैं।

स्वामी दयानन्द के अनुसार आदर्श राज्य वही है जिसमें राजा और प्रजा के बीच कोई खाई ना हो अर्थात् जिसमें जितना महत्त्व राजा का है उतना ही प्रजा का भी हो। स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश में स्वामी दयानन्द जी लिखते हैं, " राजा उसी को कहते हैं जो शुभ गुण,कर्म,स्वभाव से प्रकाशमान, पक्षपात रहित, न्याय धर्म की सेवा, प्रजाओं में पितृवत् वर्तें और उनको पुत्रवत् मान के उनकी उन्नति और सुख बढ़ाने में सदा यत्न करें।(12) स्वामी दयानन्द ने यज्ञ का महत्त्व प्रतिपादित किया है। यज्ञ का सामान्य अर्थ अग्निहोत्र है। इस अनुष्ठान के पीछे परोपकार की भावना निहित है। यज्ञ में डाले गए पदार्थ तथा घी की सुगंध वातावरण को शुद्ध करती है। यज्ञ के मन्त्रों में ईश्वर की स्तुति और प्रार्थना के साथ-साथ परोपकार की भावना को प्रकट करने वाले मंत्र भी होते हैं। स्वामी दयानन्द ने यज्ञ शब्द के तीन अर्थ किए हैं - (1) देव पूजा (2) संगतिकरण (3) अर्थदान। देव शब्द के अनेक अर्थ हैं - प्रकाश, परमात्मा और विद्वान्। स्वामी दयानन्द देव पूजा का अर्थ परमात्मा की पूजा करते हैं। (13)संगतिकरण का अर्थ - अत्यंत प्रीति पूर्वक देवता का

ध्यान,देवता का विचार तथा सत्पुरुषों का संग करना ।(14) अर्थदान वास्तव में विद्या दान है। विद्यादान को छोड़ दूसरे दान नहीं ।विद्यादान अक्षय दान है ।(15)

स्वामी दयानन्द ने मनुष्य मात्र के लिए पांच यज्ञ का उपदेश किया है। प्रतिदिन प्रभु की भक्ति और उनके प्रति धन्यवाद ज्ञापन तथा वेदों का स्वाध्याय ब्रह्म यज्ञ है। भौतिक जगत् तथा देवताओं के प्रति अग्निहोत्र करके वातावरण शुद्ध बनाना तथा विद्वानों का सम्मान करना देव यज्ञ है। अपने गुरुजनों तथा माता-पिता आदि की श्रद्धा पूर्वक सेवा करना पितृ यज्ञ है। साधु संतों तथा अतिथियों का सत्कार करना अतिथि यज्ञ है। जगत् के दुखी मानव पशु पक्षियों के लिए खाद्यान्न आपूर्ति करना बलिवैश्वदेव यज्ञ है।

स्वामी दयानन्द ने शंकराचार्य के अद्वैतवाद का भी खंडन किया है। स्वामी जी यह मानते थे कि जीव और ब्रह्म एक है उनका कहना है - परमेश्वर के अनंत, ज्ञान, आनंद, बल, क्रिया, निर्भ्रांति - तत्त्व और व्यापकता जीव से और जीव के अल्पज्ञान, अल्पबल अल्पस्वरूप, सभ्रांतितत्त्व और पराधीनता आदि गुण ब्रह्मा से भिन्न होने से जीव और परमेश्वर एक नहीं, क्योंकि इनका स्वरूप भी भिन्न है।(16)

स्वामी दयानन्द ने बालकों के समान बालिकाओं की शिक्षा की भी वकालत की। शासन, युद्ध तथा न्याय कर्म में स्त्रियों को पुरुषों के सामान्य अधिकार देने के समर्थन किया। स्वामी दयानन्द ने अपने समय में प्रचलित सामाजिक बुराइयों का विरोध किया है,वह बाल विवाह, अनमेल विवाह, बहु विवाह के कटु आलोचक थे उन्होंने कुछ स्थिति में विधवा विवाह नियोग का समर्थन किया है।

स्वामी दयानन्द के समय हिंदी अपने मूल स्वरूप से भटकी हुई थी, अंग्रेजी शासन के कूटनीतिक वातावरण में हिंदी में उर्दू फारसी, अरबी को घुसाकर उसके मूल स्वरूप को नष्ट किया जा रहा था। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने हिंदी की सर्वव्यापकता को पहचाना और उसका संरक्षण अपने हाथों में ले लिया,उन्होंने हिंदी को ही अपनी व्यावहारिक भाषा के रूप में प्रस्तुत किया और हिंदी में ही उपदेश देना प्रारंभ किया। भाषणों,लेखनों, विज्ञापनों, समाचार पत्रों में हिंदी का प्रयोग करने की सलाह दी। यद्यपि स्वामी जी गुजराती भाषी थे और संस्कृत के प्रकांड विद्वान् थे परंतु उन्होंने अपना साहित्य लेखन हिंदी में किया।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है -स्वामी दयानन्द जैसे ओजस्वी व्यक्तित्व वाले महापुरुष ने न केवल तत्कालीन समाज को ही प्रभावित किया वरन् भावी पीढ़ी पर भी अपना प्रभाव डाला। हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने की उनकी हिमायत, जन्म पर आधारित जाति प्रथा की भर्त्सना, स्वदेशी की वकालत और छुआछूत की निंदा ऐसी बातें हैं जिन्हें सर्वत्र स्वीकार कर लिया गया है। इन सब का श्रेय स्वामी दयानन्द जी को जाता है। उनके प्रगतिशील दृष्टिकोण से पता चलता है कि स्वामी दयानन्द सरस्वती भारतीय पुनर्जागरण के पुरोधा हैं। देश को नवजीवन प्रदान करने की प्रक्रिया को महान् व्यक्तियों के माध्यम से प्रभावित किया गया। भारतीय पुनर्जागरण के नायकों ने मानवीय मूल्य और प्राचीन भारतीय मनीषियों की आध्यात्मिकता को बड़ा महत्व दिया है और उन्हें पुनः प्रचलित करने का प्रयास किया। आरंभ में वर्ण व्यवस्था योग्यता और कर्म के आधार पर चलती थी परंतु बाद में यह विकृत हो गई ।ब्राह्मण जो संत दार्शनिक और समाज के सांस्कृतिक और आध्यात्मिक नेता हुआ करते थे,वही समाज पर अत्याचार करने वाले बन गए, इस विषय में स्वामी दयानन्द सरस्वती कहते हैं -वर्ण व्यवस्था जन्म पर नहीं कर्म पर आधारित होनी चाहिए। रविंद्र नाथ टैगोर स्वामी दयानन्द को आधुनिक भारत का निर्माता मानते थे उन्होंने लिखा है -मैं स्वामी दयानन्द को अपनी आदरपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं ।वह आधुनिक भारत के महान् निर्माता है विभिन्न विश्वासों और प्रथाओं के - जो हमारे देश के अध: पतन के दिनों की घनी झाड़ झंखाड थी - आपने बीच से ऐसा सीधा मार्ग निकाला जिस पर चलते हुए हिन्दू ईश्वर में आस्था रखते हुए और मानवता की सेवा करते हुए, तर्कसंगत व सरल जीवन व्यतीत कर सकें। सत्य के प्रति सुस्पष्ट दृष्टि और संकल्प में साहस के साथ उन्होंने प्रचार किया और हमारे आत्मसम्मान के लिए और मन को जगाने के लिए काम किया। जिससे भारतीय मानस आधुनिक युग की प्रगतिशील भावना के साथ सामंजस्य का प्रयास कर सके और साथ ही साथ भारत के उस भाव भूतकाल से पूरी तरह संपर्क में रहे, जिसमें आध्यात्मिक उपलब्धि की अलौकिक कांति से उसके विचार और कर्म की पूर्ण स्वतंत्रता में अपनी अभिव्यक्ति की ।(17) स्वामी दयानन्द ने उस

भवन की नींव रखी जिसे महात्मा गांधी ने खड़ा किया। दोनों में ही ईश्वर पर विश्वास था दोनों में ही हिंदू शास्त्रों में उल्लेखित आध्यात्मिक,नैतिक मूल्यों में आस्था,सरल, अनुशासित, पवित्र जीवन जीने प्रेरणा थी। स्वामी दयानन्द ने छुआछूत मिटाने का जो कार्य प्रारंभ किया था, महात्मा गांधी ने उसे जारी रखा। स्वामी दयानन्द को श्रद्धांजलि देते हुए महात्मा गांधी ने लिखा था उन बहुत सी समृद्ध विरासत में से जिन्हें स्वामी दयानन्द ने हमारे लिए छोड़ा है,उनकी छुआछूत के विरुद्ध सुस्पष्ट घोषणा उनमें से एक है।(18) महात्मा गांधी अहिंसा,निष्क्रिय,अवज्ञा और सत्याग्रह में विश्वास रखते थे स्वामी दयानन्द इसे पूरी तरह नहीं मानते थे।स्वामी दयानन्द ने वेदों के आधार पर बनी राजनीतिक प्रणाली पर बल दिया है। परंतु दोनों के लक्ष्य एकसमान देश को स्वतंत्र कराना, आत्मनिर्भर बनाना, धार्मिक और आर्थिक आत्मविश्वासी बनाना था दोनों ने ही अपने-अपने तरीके से समाज को नई दिशा दी।

सन्दर्भ सूची

1- पृष्ठ -108 युगद्रष्टा दयानन्द : एक समग्र चिन्तन

2- पृष्ठ -109 युगद्रष्टा दयानन्द : एक समग्र चिन्तन

3- डॉ भवानी लाल भारतीय, स्वामी दयानन्द सरस्वती व्यक्तित्व और विचार, पृष्ठ -68

4 -डॉ भवानी लाल भारतीय, स्वामी दयानन्द सरस्वती व्यक्तित्व और विचार, पृष्ठ -75

5- ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका,आर्ष साहित्य ट्रस्ट, दिल्ली, 1993 पृष्ठ -2

(6) संस्कार विधि भूमिका, आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट दिल्ली।

(8) स्वामी दयानन्द सरस्वती, व्यक्ति और विचार, विश्व प्रकाश गुप्त & मोहिनी गुप्त, राधा पब्लिकेशंस नई दिल्ली, पृष्ठ 155

(9) युधिष्ठिर मीमांसक, ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों का इतिहास, मीरा कार्यालय अजमेर1949 पृष्ठ 4- 5

(10) स्वामी दयानन्द सरस्वती व्यक्ति और विचार, अध्याय 12 साहित्य परिचय, राधा पब्लिकेशंस नई दिल्ली

(11) दयानन्द सरस्वती के पत्र और विज्ञापन, संपादक पंडित भगवत दत्त, रामलाल कपूर ट्रस्ट लाहौर 1945 पृष्ठ सं० 25

(12) दयानन्द सरस्वती,स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश,सिद्धान्त संख्या - 17

(13) स्वामी दयानन्द सरस्वती, उपदेश मंजरी, मधुर प्रकाशन दिल्ली पृष्ठ 63

(14)स्वामी दयानन्द सरस्वती, उपदेश मंजरी, मधुर प्रकाशन दिल्ली पृष्ठ 64

(15)स्वामी दयानन्द सरस्वती, उपदेश मंजरी, मधुर प्रकाशन दिल्ली प्रष्ठ64

(16) डॉक्टर सत्यकेतु विद्यालंकर, आर्य समाज का इतिहास प्रथम भाग दिल्ली 1982 पृष्ठ 379

(17) दयानन्द कमोमरेशन वॉल्यूम, संपादित हरविलास शारदा, 1933 पृष्ठ -2,3

(18)दयानन्द कमोमरेशन वॉल्यूम, संपादित हरविलास शारदा, 1933 पृष्ठ-1

Cite this Article:

डा.मिथलेश गंगवार, "समाज परिवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती" The Research Dialogue, Open Access Peer-reviewed & Refereed Journal, Pp-252–256, Volume-05, Issue-01, April-2026, https://theresearchdialogue.com/

This is an Open cess Journal / article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License CC BY-NC-ND 3.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited. All rights reserved.

CERTIFICATE

of Publication

This Certificate is proudly presented to

डा. मिथलेश गंगवार

For publication of Research Paper title

समाज परिवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती

Published in 'The Research Dialogue' Peer-Reviewed / Refereed Research Journal and E-ISSN: 2583-438X, Volume-05, Issue-01, Month April, Year-2026, Impact Factor (RPRI-4.73)

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Editor- In-chief

Dr. Neeraj Yadav
Executive-In-Chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at: https://theresearchdialogue.com/

DOI : https://doi.org/10.64880/theresearchdialogue.v5i1.29